# भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

# केन्द्रीय कमेटी

**प्रेस विज्ञप्ति** 4 मई 2011

## ओसामा नहीं; बल्कि युद्धोन्मादी, कसाई और खून का प्यासा ओबामा ही दुनिया का सबसे बड़ा आतंकवादी है जिससे विश्व शांति को खतरा है!

## अल क़ायदा से नहीं; बल्कि अमेरिकी साम्राज्यवाद से ही सबसे बड़ा खतरा है, न सिर्फ दुनिया के समूचे उत्पीड़ित राष्ट्रों और अवाम को, बल्कि अमेरिकी नागरिकों को भी!

## दुनिया का दरोगा सीआईए द्वारा एक कोवर्ट ऑपरेशन में मारे गए ओसामा बिन लादेन की बर्बर हत्या का विरोध करो!

2 मई को अमेरिकी साम्राज्यवादियों ने हेलिकॉप्टरों से हमला कर अल क़ायदा के प्रमुख ओसामा बिन लादेन की हत्या की। पाकिस्तान के एब्बोटाबाद शहर के एक बंगले पर अमेरिका ने रात के अंधेरे में बम गिराए जिसमें ओसामा ने शरण ली हुई थी। पाकिस्तानी सरकार को इस बाबत सूचना तक न देकर अमेरिका ने पाकिस्तान की संप्रभुता का मजाक उड़ाया। उन्होंने पाकिस्तानी राडॉरों को जाम कर दिया और चार हेलिकॉप्टरों को उसके आसमान पर उड़ाया। उस मकान पर धमाके कर अपने 'अचूक ऑपरेशन' को अंजाम दिया। इस हमले में एक महिला और दो अन्य पुरुष भी मारे गए और बताया जा रहा है कि ओसामा की पत्नी भी घायल हो गईं। चालीस मिनट तक चले इस ऑपरेशन में उनकी बच्ची इत्तेफाक से बच गई। निर्दयी ओबामा प्रशासन ने ओसामा के शव के साथ भी संवेदनहीनता बरतते हुए उसे उनके परिवार वालों को सौम्पने की बजाए अरब सागर में फेंक दिया! यह दुनिया भर में मुसलमानों के घावों पर नमक छिड़कने के बराबर है क्योंकि उन्हें अच्छी तरह मालूम था कि इससे वे कितना अपमान और गुस्सा महसूस करेंगे।

ज्यों ही ओबामा ने अल क़ायदा के प्रमुख की मौत की उल्लासपूर्ण घोषणा की, अमेरिकी सरकार की फासीवादी सहयोगियों, यानी साम्राज्यवादी देशों के राष्ट्राध्यक्षों और तीसरी दुनिया के दलाल शासकों ने खुशी से फूले न समाते हुए इसे आतंकवाद पर वैश्विक युद्ध में एक महान उपलब्धि बताई। भारत के दलाल शासक वर्गों ने मौके का फायदा उठाते हुए आरोप लगाए कि पाकिस्तान अपनी धरती पर इतने 'खतरनाक आदमी' को शरण दे रहा था। सार्क के एक सदस्य देश पर उसकी संप्रभुता का जरा भी कद्र किए बगैर किए गए इस एकतरफा हमले की निंदा में एक शब्द तक नहीं कहा। इस बात पर एक प्रश्न तक नहीं उठाया कि इस उप-महाद्वीप की धरती पर अमेरिकी युद्ध मशीनरी को क्या काम था। भारत के दलाल शासक वर्गों के इस पुराने रिकॉर्ड को देखते हुए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि उन्होंने तीसरी दुनिया में कई बार साम्राज्यवादियों, खासकर अमेरिका और नाटो द्वारा उन देशों की संप्रभुता पर हमला करते हुए किए गए दुराक्रमणकारी युद्धों और दखलंदाजियों का खुला और छिपा समर्थन किया था और वे अमेरिकी साम्राज्यवादियों के आगे हमेशा घुटने टेकते रहे।

2001 में अफगानिस्तान पर नाटो के युद्ध के बाद से आतंक के खिलाफ अपने तथाकथित युद्ध में पाकिस्तानी सरकार का 'समर्थन हासिल करने' के लिए अमेरिका अपनी बाह-मरोड़ और धौंस जमाने की नीति में आए दिन बढ़ोत्तरी कर रही है। इस युद्ध में पाकिस्तान अमेरिका का विस्तारित पिछवाड़ा बना हुआ है। यह ऑपरेशन इस युद्धोन्मादी धौंसिया के अनगिनत अंधाधुंध हमलों का एक ताजा उदाहरण है और यह खासकर पिछले दस सालों में उसके द्वारा पाकिस्तान में अनगिनत बार की गई बेरोकटोक दखलंदाजियों की धारावाहिकता भर है। पाकिस्तान के दलाल शासक उसके आगे इस कदर नतमस्तक हो गए कि इस प्रकार की आक्रामक कार्रवाई के बाद भी पाकिस्तानी सरकार ने सभी अंतराष्ट्रीय कानूनों की धज्जियां उड़ाते हुए किए गए इस हमले का खुलकर खण्डन तक नहीं किया। समूचे पाकिस्तान में उठ खड़े हुए व्यापक आंदोलनों से बने दबाव के चलते ही उसने दबी जुबान से यह बात कही कि यह हमला अवैध था और इसे उसकी जानकारी के बगैर अंजाम दिया गया था। लेकिन जब मालिक ने यह कहा कि 'तो क्या है? हम माफी नहीं मांगने वाले हैं' तो इस नौकर का मुंह बंद हो गया। अमेरिकी साम्राज्यवादियों के सामने दुम हिलाते हुए इसने जिस प्रकार पूरी तरह घुटने टेक रखे हैं, इसे देखते हुए यह भी कोई आश्चर्य की बात नहीं है। दुनिया का नम्बर एक आतंकवादी ओबामा आए दिन पाकिस्तान के पश्तूनी कबीलाई इलाकों में अनगिनत ड्रोन हमले कर रहा है जिसमें सैकड़ों पाकिस्तानी नागरिकों (जिनमें ज्यादातर महिलाएं और बच्चे शामिल हैं) की मौत हो रही है। दर्जनों संभावित खून के प्यासे रेमण्ड डेविस पाकिस्तान की सड़कों पर बेधड़क घूम रहे हैं जिन्हें आम पाकिस्तानी नागरिकों का खून बहाने में जरा भी संकोच नहीं है। फिर भी ये बेशर्म और बेहया पाकिस्तानी शासक वर्ग इस हत्यारे 'नोबेल शांति पुरस्कार विजेता' के लिए लाल कालीन बिछाने में मशगूल हैं जो पाकिस्तानियों के खून से सना है।

कथित तौर पर ओसामा बिन लादेन के नेतृत्व में अल क़ायदा द्वारा किए गए 9/11 के हमलों के बाद से तत्कालीन राष्ट्रपति जॉर्ज बुश के नेतृत्व में अमेरिकी साम्राज्यवादियों ने दुनिया भर में वहशियाना मुस्लिम विरोधी दुष्प्रचार शुरू किया। अफगानिस्तान और इराक में दुराक्रमणकारी युद्ध किए। इन अन्यायपूर्ण युद्धों में लाखों आम जनता हताहत हुई। कहने की जरूरत ही नहीं है कि महिलाओं और बच्चों के साथ कितनी बर्बरता बरती गई। आतंकवाद पर युद्ध के नाम पर दुनिया भर में मुसलमानों को निशाने पर लिया गया और उन पर बेहद अत्याचार किए गए। अल क़ायदा को इस 'आतंकवाद' के चेहरे के रूप में दिखाया गया और ओसामा को अमेरिका और दुनिया का नम्बर एक दुश्मन बताकर बढ़ा-चढ़ाकर प्रचारित किया गया। अल क़ायदा को

हरेक आतंकवादी हमले के लिए जिम्मेदार बताया गया ताकि मुसलमानों के खिलाफ जारी सभी किस्म के अत्याचारों को जायज ठहराया जा सके। ओसामा और अल क़ायदा के दूसरे नेताओं की धरपकड़ की मुहिम चलाई गई और तथाकथित 'आंतकवाद पर युद्ध' में अरबों डॉलर बहा दिए गए। अफगानिस्तान और इराक में कठपुतली सरकारों की स्थापना की गई और पाकिस्तान की स्थिति करीब-करीब उपनिवेश जैसी बन गई। मुस्लिम जन समुदायों को 'आतंकवाद पर युद्ध' का दैत्य रौंद रहा है जिसमें लाखों लोगों को कुचला जा रहा है।

इतिहास में यह बात कई बार साबित हो चुकी है कि एक नेता को मारकर आप किसी संगठन को खत्म नहीं कर सकते। जब तक कि उसकी बुनियादी वजहों को, जैसे कि इस मामले में अंधाधुंध साम्राज्यवादी शोषण, उत्पीड़न, दखलंदाजी और अपमान हैं, दूर नहीं करेंगे तब तक इसे आप हल नहीं कर सकते। साम्राज्यवादियों के खिलाफ, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवादियों और इज्राएली यहूदीवादियों के खिलाफ मुस्लिम जनता के दिलों में सुलग रहे गहरे आक्रोश और असंतोष की अभिव्यक्ति कई रूपों में सामने आ रही है जिसमें अल क़ायदा एक है। अरब दुनिया में उठ रहे जन उभार इस आक्रोश की – जो उनके देशों के तानाशाहों और साम्राज्यवाद के खिलाफ है – एक और अभिव्यक्ति है। साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ाई में अल क़यदा जैसे संगठनों द्वारा लागू कुछ तरीकों से आम लोगों को क्षति हो रही है और जिन तरीकों से निर्दोष लोगों की मौत होती है उसका खण्डन करना जरूरी है। लेकिन हमें इन्हें संदर्भ से अलग कर नहीं देखना चाहिए और इन्हें 'अमेरिका से निहायत नफरत करने वाले' कुछ सिरफिरों की कार्रवाइयों के रूप में नहीं देखना चाहिए जैसा कि अमेरिकी सरकार चाह रही है कि उसके नागरिक इसे विश्वास करें। **अगर साम्राज्यवादी दखलंदाजियां और दुराक्रमणकारी युद्ध नहीं होते तो अल क़ायदा नहीं होता। अगर बुश और ओबामा जैसे हत्यारे नहीं होते तो आसामा भी नहीं होता।**

भाकपा (माओवादी) समूची जनता का आह्वान करती है कि वह अमेरिकी साम्राज्यवादियों द्वारा की गई ओसामा बिन लादेन की बर्बर हत्या का खण्डन करे। हमारी मांग है कि 'आतंकवाद पर युद्ध' के नाम से मुसलमानों पर जारी सभी किस्म के हमलों को फौरन बंद किया जाए।

**भाकपा (माओवादी) दृढ़तापूर्वक दोहराती है कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद ही ऐसी एक मात्र विचारधारा है जो दुनिया में हर किस्म के शोषण और उत्पीड़न का अंत कर सकती है। सिर्फ सर्वहारा और उसकी कम्युनिस्ट पार्टी की अगुवाई में उत्पीड़ित राष्ट्र और जन समुदाय, जोकि तानाशाहों, 'लोकतंत्र' के नाम पर चलाई जा रही बुर्जुआई तानाशाहियों और साम्राज्यवाद द्वारा दबे-कुचले जा रहे हैं, सम्पूर्ण मुक्ति हासिल कर सकते हैं। अल क़ायदा या उस जैसे दूसरे संगठनों की कितनी भी कार्रवाइयों से साम्राज्यवादियों के दुराक्रमण और दखलंदाजी से आजादी या संप्रभुता जीती नहीं जा सकती। फिलिस्तीनियों के संघर्षों समेत अरब दुनिया में उठ रहे जन-उभार जब तक अपने देशों में साम्राज्यवाद, सामंतवाद और दलाल नौकरशाह पूंजीवाद के खिलाफ जनयुद्धों के रूप में संगठित नहीं होंगे तब तक उनके संगठनों द्वारा जारी अथक संघर्ष और उनकी अनमोल क़ुरबानियां सफलता के मुकाम तक नहीं पहुंचेंगी।**

भाकपा (माओवादी) दुनिया के समूचे उत्पीड़ित राष्ट्रों और जन समुदायों का आह्वान करती है कि वे साम्राज्यवादियों, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवादियों के हमलों का विरोध करें जो अन्यायपूर्ण तरीके से आतंकवाद के खिलाफ तथाकथित युद्ध शुरू कर दुनिया भर में मुस्लिम जन समुदायों पर हमले कर रहे हैं। **हम अमेरिकी नागरिकों से यह समझने की अपील करते हैं कि तथाकथित आतंकवादी नहीं, बल्कि उनके अपने शासकों द्वारा तीसरी दुनिया के देशों में लागू बर्बर साम्राज्यवादी नीतियां ही अमेरिकी नागरिकों की जिंदगियों को खतरे में डाल रही हैं; आप्रवासी नहीं, बल्कि पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्था ही बारम्बार पैदा होने वाले वित्तीय संकटों के लिए जिम्मेदार है जिससे उनके हित खतरे में पड़ रहे हैं या उनके बीच बेरोजगारी बढ़ रही है। हम अमेरिकी जन समुदायों से आग्रह करते हैं कि वे हमारे सांझे दुश्मन के खिलाफ उसके घरेलू मैदान में अपनी आवाज बुलंद करें। आप अपने देश के शासकों द्वारा दबी-कुचली जा रही जनता के जायज संघर्षों का समर्थन कर खुद की मुक्ति का रास्ता भी सुगम बना सकेंगे। हमें उम्मीद है कि इजारेदार पूंजी के खिलाफ अमेरिका समेत सभी साम्राज्यवादी देशों के मजदूर वर्ग व जन समुदाय के संघर्ष तथा उत्पीड़ित राष्ट्रों और तीसरी दुनिया के जन समुदायों के संघर्ष एकताबद्ध होंगे और एक भारी तूफान का शक्ल ले लेंगे जिसमें हमारा सांझा दुश्मन निश्चित रूप से तबाह हो जाएगा।**

भाकपा (माओवादी) खासतौर पर दक्षिण एशिया के जन समुदायों का आह्वान करती है कि वे अफगानिस्तान और पाकिस्तान में अमेरिकी नेतृत्व वाले नाटो बलों की बर्बरता के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करें और उनकी फौरन वापसी की मांग करें। पाकिस्तान की धरती पर अमेरिकी साम्राज्यवादियों के हमलों के खिलाफ तथा साम्राज्यवादी धौंस व दखलंदाजी के खिलाफ संघर्षरत पाकिस्तान के अवाम का समर्थन करें।

**आइए, हम सब इस बात को समझ लें कि अमेरिकी साम्राज्यवाद विश्व जनता का नम्बर एक दुश्मन है जिससे विश्व शांति, तीसरी दुनिया के देशों की संप्रभुता और उनके विकास को खतरा है। आइए, हम साम्राज्यवादियों और अपने देशों में मौजूद उनके दलालों को उखाड़ फेंक दें ताकि हम शोषण और उत्पीड़न से पूरी तरह मुक्त जिंदगी जी सकें तथा इज्जत से सिर उठाकर जी सकें।**

**( अभय )**
**प्रवक्ता**
**केन्द्रीय कमेटी**
**भाकपा ( माओवादी )**